प्रमाण प्रकरण

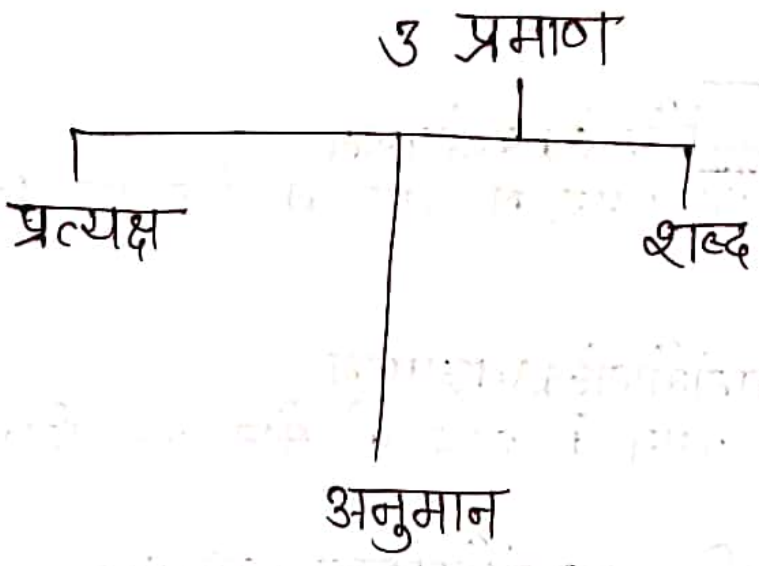

① प्रत्यक्ष प्रमाण – इन्द्रियार्थ सन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्।
इन्द्रिय और पदार्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ही प्रत्यक्ष है। प्र ज्ञानकरणं प्रत्यक्षम् - प्रत्यक्ष ज्ञान का 'करण' प्रत्यक्ष होता है। यह दो प्रकार का होता है

* निर्विकल्पक – निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पकम्। यथा - किञ्चिदिदमिति। निष्प्रकारक ज्ञान निर्विकल्पक है। जैसे - यह कुछ है।

* सविकल्पक – सप्रकारकं ज्ञानं सविकल्पकम्। यथा - डित्थोऽयं ब्राह्मणोऽयं, श्यामोऽयमिति। सप्रकारक ज्ञान सविकल्पक है। जैसे - यह डित्थ है, यह ब्राह्मण है तथा यह श्याम है।

*प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः प्रत्यक्ष ज्ञान का हेतु इन्द्रिय और पदार्थ का सन्निकर्ष 6 प्रकार का है

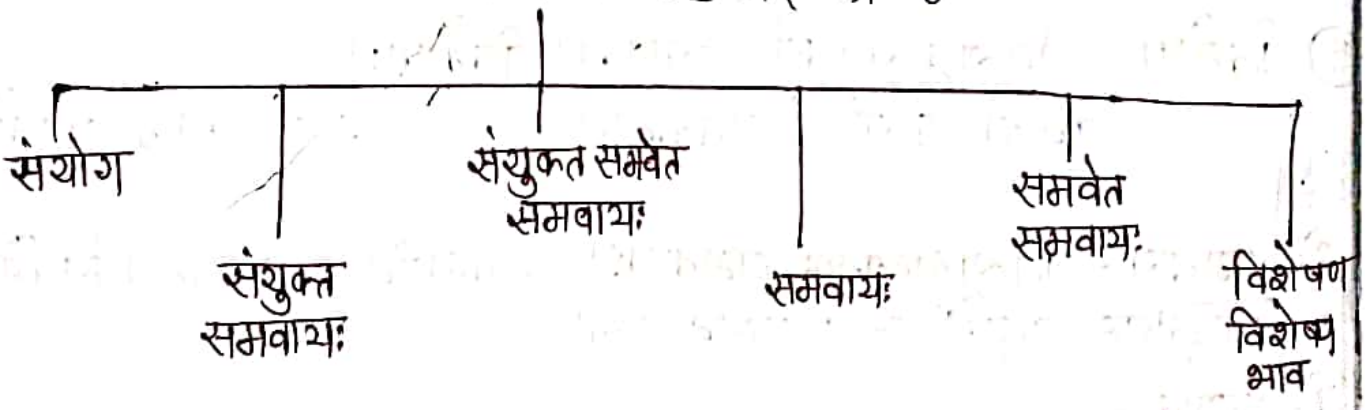

Scanned with CamScanner

1. संयोग- चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः। नेत्र से घट का प्रत्यक्ष होना संयोग है।

2. संयुक्त समवाय- घटप्रत्यक्षजनने संयुक्त समवायः सन्निकर्षः- घट के रूप का प्रत्यक्ष करने में 'संयुक्त समवाय' नामक सन्निकर्ष है।

3. संयुक्त समवेत समवाय- रूपत्व सामान्य प्रत्यक्षे संयुक्त समवेत समवायः रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में 'संयुक्त समवेत समवाय' नामक सन्निकर्ष होता है।

4. समवाय- श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः - श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार करने में 'समवाय' होता है।

5. समवेत समवाय- शब्दसाक्षात्कारे समवेतसमवायः - शब्दत्व के साक्षात्कार में 'समवेत समवाय' सन्निकर्ष होता है।

6. विशेषण विशेष्य भाव - अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः - अभाव का प्रत्यक्ष करने में विशेषण - विशेष्य भाव सन्निकर्ष होता है।

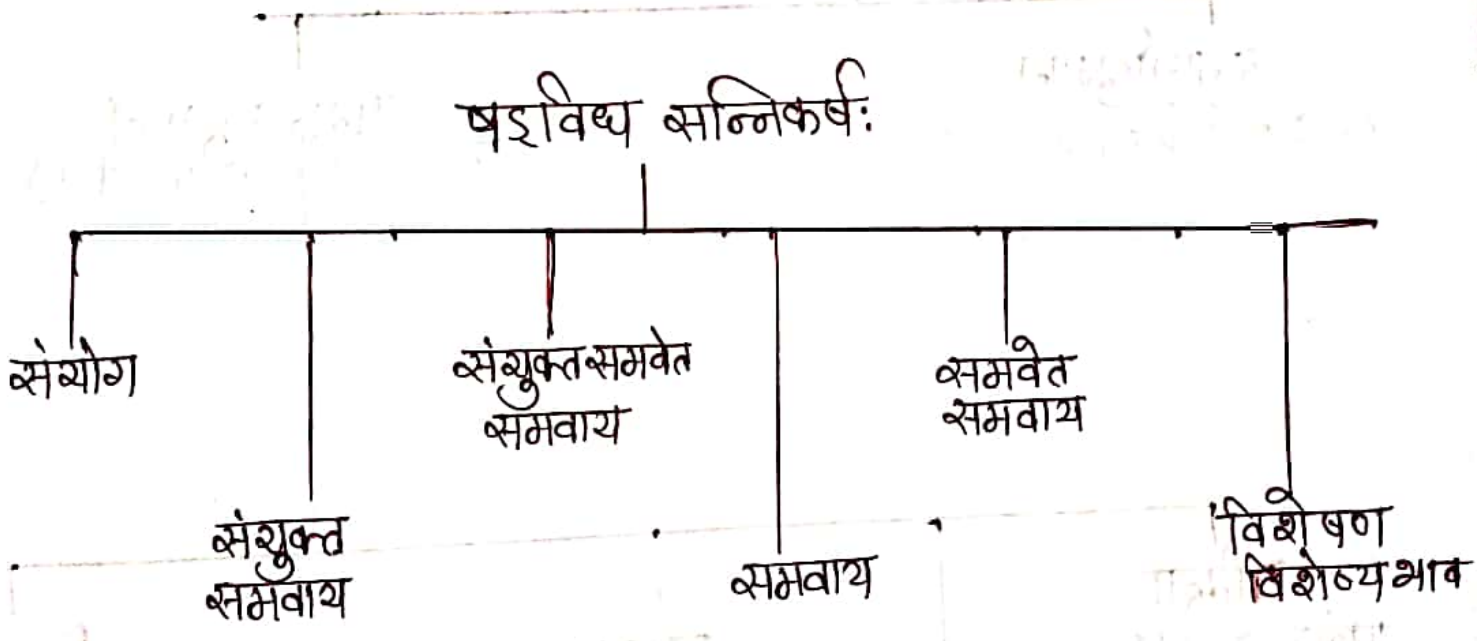

Scanned with CamScanner

अनुमान खण्ड

अनुमान - अनुमितिकरणमनुमानम् ।

अनुमिति का करण अनुमान है। परामर्शजन्यं ज्ञानमनुमितिः। परामर्श से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ही अनुमिति है।

व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः व्याप्ति से विशिष्ट पक्षधर्मता विषयक ज्ञान ही परामर्श है। यथा- 'वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वतः' ~~व्याप्ति~~ अग्नि से युक्त यह पर्वत धूमवाला है। यह ज्ञान परामर्श है। इससे उत्पन्न होने वाला ज्ञान "पर्वतो वह्निमान्" ही अनुमिति है।

"यत्र- यत्र धूमः तत्र तत्र वह्नि इति साहचर्यनियमो व्याप्तिः"। व्याप्त (अग्नि) का पर्वतादि (पक्ष) में विद्यमान होना ही पक्षधर्मता है।

अनुमानं द्विविधम् -

- स्वार्थानुमान (स्व अनुमिति हेतुः स्वार्थम्)
- परार्थानुमान (पर अनुमिति हेतुः परार्थम्)
  - प्रतिज्ञा — पर्वतोऽयं वह्निमान्
  - हेतु — धूमत्त्वात्
  - उदाहरण — यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र वह्निः यथा महानसम्
  - उपनय — तथा चायम्
  - निगमन — तस्मात् तथेति

Scanned with CamScanner

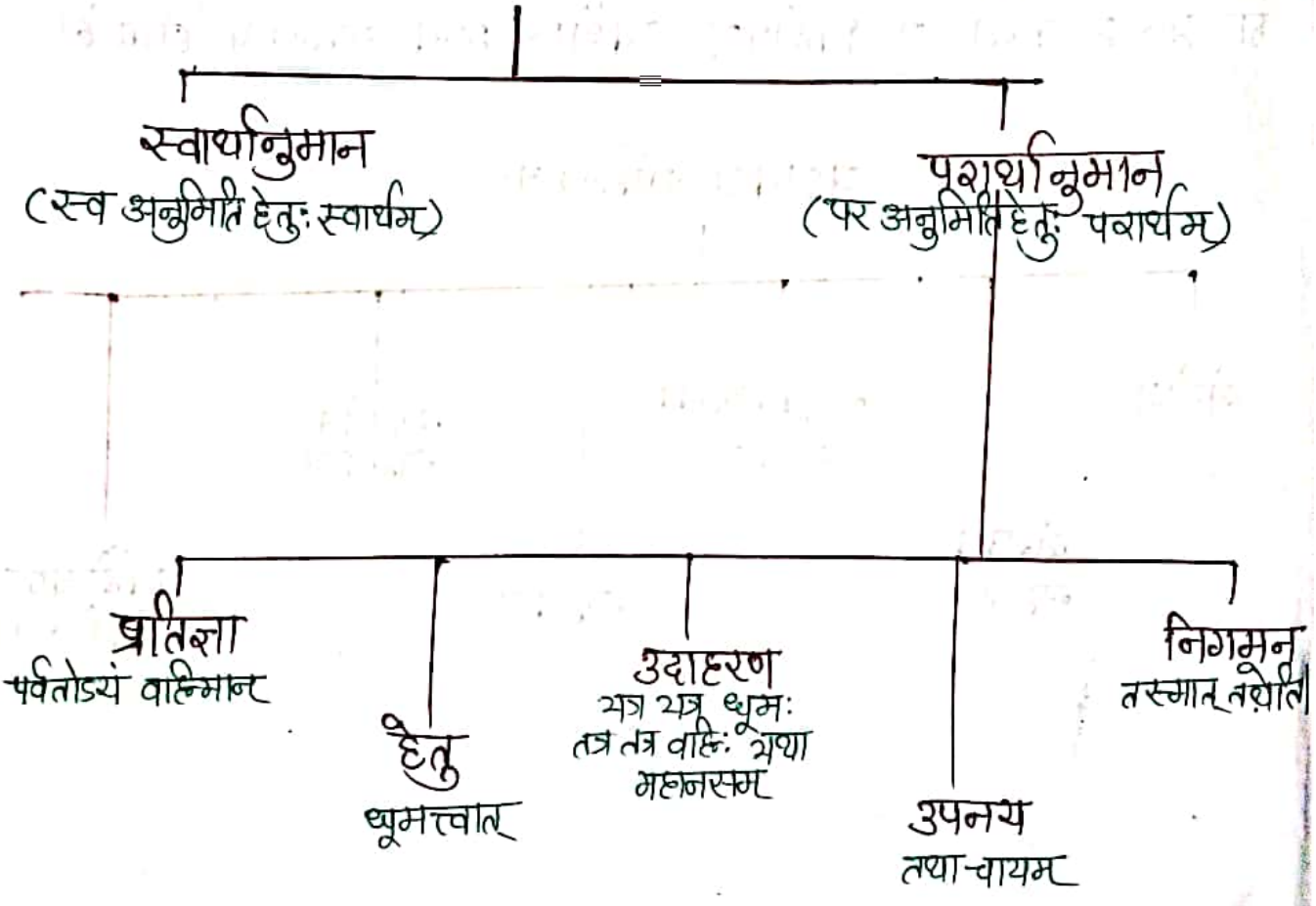

लिङ्ग

- **अन्वयव्यतिरेकि**
  - अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमदन्वयव्यतिरेकि
  - ① यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र वह्निः। यथा - महानसे।
  - ② यत्र यत्र अग्न्याभावः तत्र तत्र धूमाभावः, यथा - महाह्रदे।
- **केवलान्वयि**
  - अन्वयमात्रव्याप्तिकं
  - घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात् पटवत्
- **केवलव्यतिरेकि**
  - व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं
  - पृथिवी इतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्वात् यदितरेभ्यो न भिद्यते न तद्गन्धवत् यथा - जलम्

पक्षः - सन्दिग्धसाध्यवान्। यथा - धूमवत्वे हेतौ पर्वतः।

सपक्षः - निश्चितसाध्यवान्। यथा - तत्रैव महानसम्।

विपक्षः - निश्चितसाध्याऽभाववान्। यथा तत्रैव महाह्रदः।

हेत्वाभासाः (पञ्चप्रकारकाः)

- **सव्यभिचार** (अनैकान्तिक)
  - सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः
  - **साधारण** - साध्याभाववद्वृत्तिः
  - **असाधारण** - सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिरसाधारणः
  - **अनुपसंहारी** - अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोऽनुपसंहारी
- **विरुद्ध**
  - साध्य अभावव्याप्तः हेतु
- **सत्प्रतिपक्षः**
  - यस्य साध्यअभाव साधकं हेत्वन्तरं विद्यते
- **असिद्ध**
  - **आश्रयासिद्ध** - गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्
  - **स्वरूपासिद्ध** - शब्दो गुणः चाक्षुषत्वात् रूपवत्
  - **अन्यथासिद्ध** - पर्वतो धूमवान् वह्निमत्वात्
- **बाधित**
  - वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात्

Scanned with CamScanner